ISSN : 2347-9108

-धरती-

साहित्य और विचार की अनियतकालीन पत्रिका

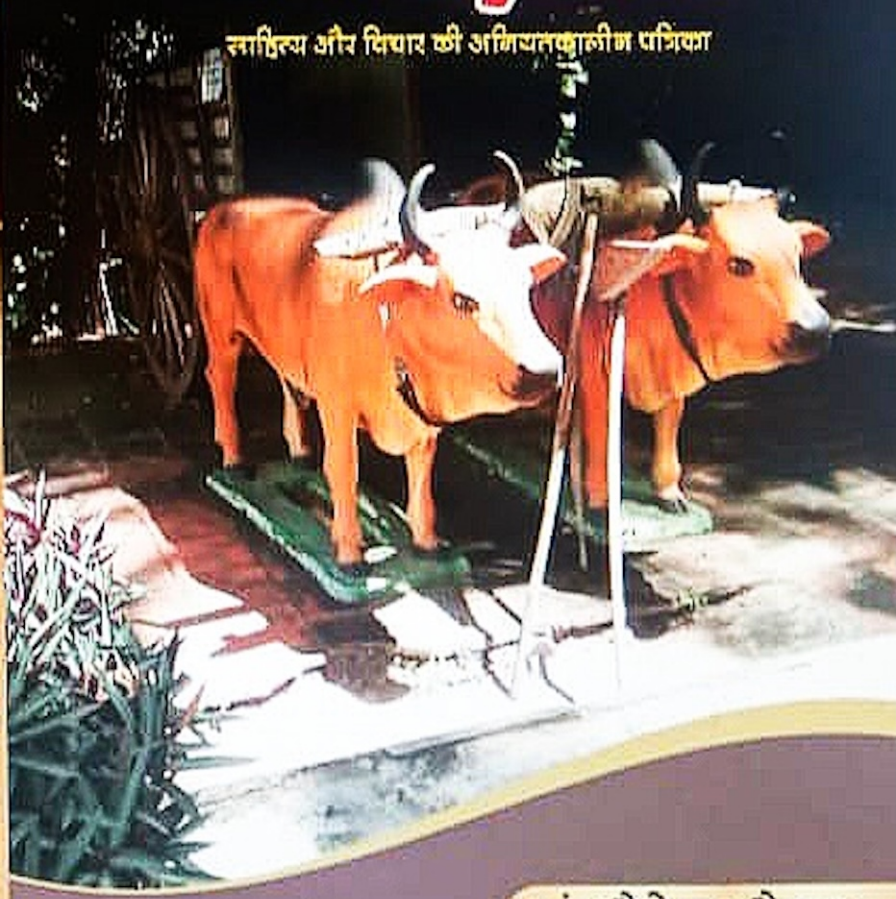

सं. शैलेन्द्र चौहान

ISSN: 2347-9108

धरती अंक 22

साहित्य और विचार की अनियतकालीन पत्रिका

अगस्त, 2025

संपादक: शैलेन्द्र चौहान
संपादकीय कार्यालय : 34/242,
सेक्टर-3 ,प्रतापनगर,जयपुर-302033
ई मेल:-
dharati.aniyatkalik@gmail.com
मोबाइल : 7838897877

पत्रिका प्राप्त करने के लिए सहयोग राशि कृपया निम्न खाते में जमा कराएँ। खाताधारक का नाम :
Shailendra Singh Chauhan
खाता संख्या - 1226226979
बैंक- सेंट्रल बैंक ऑफ इंडिया
ब्रांच - गोपालपुरा सर्किल,
महावीर नगर, जयपुर-302018
IFSC : CBIN 0283093

UPI माध्यम से मोबाइल नं. 7838897877 पर भेजें

इस अंक का मूल्य:
80/ रुपये
डाक खर्च: 50 रुपये
प्रति अंक
आवरण:
छायांकन- शैलेन्द्र चौहान
अंतिम पृष्ठ:
चित्र-गोपाल नायडू

मुद्रण: शीतल ऑफसेट, जयपुर

'धरती' में प्रकाशित रचनाओं, आलेखों में व्यक्त विचारों से संपादक और प्रकाशक की वैचारिक सहमति आवश्यक नहीं है।

अनुक्रम

1.	संप्रेषण: हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता में प्रतिरोध के स्वर	3
2.	स्मरण: शलभ श्रीराम सिंह, जिनकी नज़्मों का परचम अभी भी फहर रहा है –कृष्ण प्रताप सिंह	11
3.	संवाद : लोक जीवन और शिक्षा का अंतर्संबंध –महेश चंद्र पुनेठा	14
4.	बहस : लेखन और विचारधारा–गजेन्द्र रावत	22
5.	कहानी : सरप्राइज़ और लड़की –कृष्ण कुमार भगत	26
6.	कहानी : जनतंत्र के भेड़िए –सुरेन्द्र प्रजापति	29
7.	कहानी : तेरा जवाब नहीं! –देवेन्द्र कुमार पाठक	39
8.	कहानी : चक्रव्यूह के मुहाने पर –रमेश खत्री	53
9.	कविताएं : ब्रज श्रीवास्तव	60
10.	कविताएं : कैलाश मनहर	61
11.	कविताएं : अनवर सुहैल	66
12.	कविताएं : नवीन सागर	69
13.	कविताएं : शिल्पी जैन	70
13.	कविताएं : देवेन्द्र आर्य	72
14.	कविताएं : मुकेश कुमार ऋषि वर्मा	73
15.	गजलें : महेश कटारे सुगम की बुंदेली गजलें	74
16.	कविता : जॉन गुडलॉवस्की	78
17.	कविता : दीपक जायसवाल	80

हिंदी की साहित्यिक पत्रकारिता में प्रतिरोध के स्वर

जैसाकि विदित है हिंदी पत्रकारिता के इतिहास में भारतेंदु युग 1873 से 1900 तक चलता है। इस युग के एक छोर पर भारतेंदु की ''हरिश्चंद्र मैगजीन'' थी और दूसरी ओर नागरीप्रचारिणी सभा द्वारा अनुमोदनप्राप्त ''सरस्वती''। उन्नीसवीं शताब्दी के इन 27 वर्षों का आदर्श भारतेंदु की पत्रकारिता थी। ''कविवचनसुधा'' (1867), ''हरिश्चंद्र मैगजीन'' (1874), ''श्री हरिश्चंद्र चंद्रिका''(1874), बालाबोधिनी (स्त्रीजन की पत्रिका, 1874) के रूप में भारतेंदु ने इस दिशा में पथप्रदर्शन किया था। उनकी टीका-टिप्पणियों से अधिकारी तक घबराते थे और ''कविवचनसुधा'' के ''पंच'' पर रुष्ट होकर काशी के मजिस्ट्रेट ने भारतेंदु के पत्रों को शिक्षा विभाग के लिए लेना भी बंद करा दिया था। इसमें संदेह नहीं कि पत्रकारिता के क्षेत्र भी भारतेंदु पूर्णतया निर्भीक थे और उन्होंने नए-नए पत्रों के लिए प्रोत्साहन दिया। ''हिंदी प्रदीप'', ''भारतजीवन'' आदि अनेक पत्रों का नामकरण भी उन्होंने ही किया था। उनके युग के सभी पत्रकार उन्हें अग्रणी मानते थे।

भारतेंदु के बाद इस क्षेत्र में जो पत्रकार आए उनमें प्रमुख थे पंडित रुद्रदत्त शर्मा, (भारतमित्र, 1877), बालकृष्ण भट्ट (हिंदी प्रदीप, 1877), दुर्गाप्रसाद मिश्र (उचित वक्ता, 1878), पंडित सदानंद मिश्र (सारसुधानिधि, 1878), पंडित वंशीधर (सज्जन-कीर्ति-सुधाकर, 1878), बदरीनारायण चौधरी ''प्रेमधन'' (आनंद कादंबिनी, 1881), देवकीनंदन त्रिपाठी (प्रयाग समाचार, 1882), राधाचरण गोस्वामी (भारतेंदु, 1882), पंडित गौरीदत्त (देवनागरी प्रचारक, 1882), राज रामपाल सिंह (हिंदुस्तान, 1883), प्रतापनारायण मिश्र (ब्राह्मण, 1883), अंबिकादत्त व्यास, (पीयूषप्रवाह, 1884), बाबू रामकृष्ण वर्मा (भारतजीवन, 1884), पं. रामगुलाम अवस्थी (शुभचिंतक, 1888), योगेशचंद्र वसु (हिंदी बंगवासी, 1890), पं. कुंदनलाल (कवि व चित्रकार, 1891), और बाबू देवकीनंदन खत्री एवं बाबू जगन्नाथदास (साहित्य सुधानिधि, 1894)।

1895 ई. में ''नागरीप्रचारिणी पत्रिका'' का प्रकाशन आरंभ होता है। इस पत्रिका से गंभीर साहित्य समीक्षा का आरंभ हुआ और इसलिए हम इसे एक निश्चित प्रकाशस्तंभ मान सकते हैं। 1900 ई. में ''सरस्वती''और ''सुदर्शन'' के अवतरण के साथ हिंदी पत्रकारिता के इस दूसरे युग पर पटाक्षेप हो जाता है।

इन 27 वर्षों में हमारी पत्रकारिता अनेक दिशाओं में विकसित हुई। प्रारंभिक पत्र शिक्षाप्रसार और धर्मप्रचार तक सीमित थे। भारतेंदु ने सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक दिशाएँ भी विकसित कीं। उन्होंने ही ''बालाबोधिनी'' (1874) नाम से पहला स्त्री-मासिक-पत्र चलाया। कुछ वर्ष बाद महिलाओं को स्वयं इस क्षेत्र में उतरते देखते हैं- ''भारतभगिनी'' (हरदेवी, 1888), ''सुगृहिणी'' (हेमंतकुमारी, 1889)।

आज वही पत्र हमारी इतिहासचेतना में विशेष महत्वपूर्ण हैं जिन्होंने भाषा शैली, साहित्य अथवा राजनीति के क्षेत्र में कोई अप्रतिम कार्य किया हो। साहित्यिक दृष्टि से ''हिंदी प्रदीप'' (1877), ब्राह्मण (1883), क्षत्रिय पत्रिका (1880), आनंद कादंबिनी (1881), भारतेंदु (1882), देवनागरी प्रचारक (1882), वैष्णव पत्रिका (पश्चात् पीयूषप्रवाह, 1883), कवि के चित्रकार (1891), नागरी नीरद (1883), साहित्य सुधानिधि (1894), और राजनीतिक दृष्टि से भारतमित्र (1877), उचित वक्ता (1878), सार सुधानिधि (1878), भारतोदय (दैनिक, 1883), भारत जीवन (1884), भारतोदय (दैनिक, 1885), शुभचिंतक (1887) और हिंदी बंगवासी (1890) विशेष महत्वपूर्ण हैं। इन पत्रों में हमारे 19वीं शताब्दी के साहित्यरसिकों, हिंदी के कर्मठ उपासकों, शैलीकारों और चिंतकों की सर्वश्रेष्ठ निधि सुरक्षित है। यह क्षोभ का विषय है कि हम इस महत्वपूर्ण सामग्री का पत्रों की फाइलों से उद्धार नहीं कर सके। बालकृष्ण भट्ट, प्रतापनारायण मिश्र, सदानंद मिश्र, रुद्रदत्त शर्मा, अंबिकादत्त व्यास और बालमुकुंद गुप्त जैसे सजीव लेखकों की कलम से निकले हुए न जाने कितने निबंध, टिप्पणी, लेख, पंच, हास परिहास औप स्केच आज में हमें अलभ्य हो रहे हैं। आज भी हमारे पत्रकार उनसे बहुत कुछ सीख सकते हैं। अपने समय में तो वे अग्रणी थे ही।

बीसवीं शताब्दी की पत्रकारिता हमारे लिए अपेक्षाकृत निकट है और उसमें बहुत कुछ पिछले युग की पत्रकारिता की ही विविधता और बहुरूपता मिलती है। 19वीं शती के पत्रकारों को भाषा-शैलीक्षेत्र में अव्यवस्था का सामना करना पड़ा था। उन्हें एक ओर अंग्रेजी और दूसरी ओर उर्दू के पत्रों के सामने अपनी वस्तु रखनी थी। अभी हिंदी में रुचि रखनेवाली जनता बहुत छोटी थी। धीरे-धीरे परिस्थिति बदली और हम हिंदी पत्रों को साहित्य और राजनीति के क्षेत्र में नेतृत्व करते पाते हैं। इस शताब्दी से धर्म और समाज सुधार के आंदोलन कुछ पीछे पड़ गए और जातीय चेतना ने धीरे-धीरे राष्ट्रीय चेतना का रूप ग्रहण कर लिया। फलतः अधिकांश पत्र, साहित्य और राजनीति को ही लेकर चले। साहित्यिक पत्रों के क्षेत्र में पहले दो दशकों में आचार्य द्विवेदी द्वारा संपादित ''सरस्वती''(1903-1918) का नेतृत्व रहा। वस्तुतः इन बीस वर्षों में हिंदी के मासिक पत्र एक महान साहित्यिक शक्ति के रूप में

सामने आए। शृंखलित उपन्यास कहानी के रूप में कई पत्र प्रकाशित हुए- जैसे उपन्यास 1901, हिंदी नाविल 1901, उपन्यास लहरी 1902, उपन्याससागर 1903, उपन्यास कुसुमांजलि 1904, उपन्यासबहार 1907, उपन्यास प्रचार 1912। केवल कविता अथवा समस्यापूर्ति लेकर अनेक पत्र उन्नीसवीं शतब्दी के अंतिम वर्षों में निकलने लगे थे। वे चले रहे। समालोचना के क्षेत्र में ''समालोचक''(1902) और ऐतिहासिक शोध से संबंधित ''इतिहास''(1905) का प्रकाशन भी महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं। परंतु सरस्वती ने ''मिस्लेनी'' के रूप में जो आदर्श रखा था, वह अधिक लोकप्रिय रहा और इस श्रेणी के पत्रों में उसके साथ कुछ थोड़े ही पत्रों का नाम लिया जा सकता है, जैसे ''भारतेंदु''(1905), नागरी हितैषिणी पत्रिका, बाँकीपुर (1905), नागरीप्रचारक (1906), मिथिला मिहिर (1910) और इंदु (1909)। ''सरस्वती'' और ''इंदु'' दोनों हमारी साहित्यचेतना के इतिहास के लिए महत्वपूर्ण हैं और एक तरह से हम उन्हें उस युग की साहित्यिक पत्रकारिता का शीर्षमणि कह सकते हैं। ''सरस्वती'' के माध्यम से आचार्य महावीरप्रसाद द्विवेदी और ''इंदु'' के माध्यम से पंडित रूपनारायण पांडेय ने जिस संपादकीय सतर्कता, अध्यवसाय और ईमानदारी का आदर्श हमारे सामने रखा वह हमारी पत्रकारिता को एक नई दिशा देने में समर्थ हुआ।

आधुनिक युग (1921) के बाद हिंदी पत्रकारिता का काल आरंभ होता है। इस युग में हम राष्ट्रीय और साहित्यिक चेतना को साथ साथ पल्लवित पाते हैं। इसी समय के लगभग हिंदी का प्रवेश विश्वविद्यालयों में हुआ और कुछ ऐसे कृती संपादक सामने आए जो अंग्रेजी की पत्रकारिता से पूर्णत: परिचित थे और जो हिंदी पत्रों को अंग्रेजी, मराठी और बँगला के पत्रों के समकक्ष लाना चाहते थे। फलत: साहित्यिक पत्रकारिता में एक नए युग का आरंभ हुआ। राष्ट्रीय आंदोलनों ने हिंदी की राष्ट्रभाषा के लिए योग्यता पहली बार घोषित की ओर जैसे-जैसे राष्ट्रीय आंदोलनों का बल बढ़ने लगा, हिंदी के पत्रकार और पत्र अधिक महत्व पाने लगे। 1921 के बाद गांधी जी के नेतृत्व में राष्ट्रीय आंदोलन मध्यवर्ग तक सीमित न रहकर ग्रामीणों और श्रमिकों तक पहुंच गया और उसके इस प्रसार में हिंदी पत्रकारिता ने महत्वपूर्ण योग दिया। सच तो यह है कि हिंदी पत्रकार राष्ट्रीय आंदोलनों की अग्र पंक्ति में थे और उन्होंने विदेशी सत्ता से डटकर मोर्चा लिया। विदेशी सरकार ने अनेक बार नए नए कानून बनाकर समाचारपत्रों की स्वतंत्रता पर कुठाराघात किया परंतु जेल, जुर्माना और अनेकानेक मानसिक और आर्थिक कठिनाइयाँ झेलते हुए भी हमारे पत्रकारों ने स्वतंत्र विचार की दीपशिखा जलाए रखी।

1921 के बाद साहित्यक्षेत्र में जो पत्र आए उनमें प्रमुख हैं स्वार्थ (1922), माधुरी (1923), मर्यादा, चाँद (1923), मनोरमा